## भगत कबीर – सबद ११
## गरभ वास महि कुलु नही जाती ॥
## रागु गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२४

गरभ वास महि कुलु नही जाती ॥
ब्रह्म बिंदु ते सभ उतपाती ॥१॥
कहु रे पंडित बामन कब के होए ॥
बामन कहि कहि जनमु मत खोए ॥१॥ रहाउ ॥
जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ ॥
तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥२॥
तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ॥
हम कत लोहू तुम कत दूध ॥३॥
कहु कबीर जो ब्रह्मु बीचारै ॥
सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारै ॥४॥७॥

**सार:** पहचान देने वाले प्रतीक जैसे जाति, वर्ग और वंश, मानवीय रचनाएँ हैं। ये समाज को संगठित करने के औज़ार हैं जिन्हें अक्सर असमानता और विभाजन पैदा करने के लिए दुरुपयोग किया जाता है। हालाँकि, आध्यात्मिक सत्य के क्षेत्र में यह संरचनाएँ अप्रासंगिक हैं जो हमें आलोचनात्मक रूप से सोचने और विरासत में मिली मान्यताओं और विश्वासों को त्यागने के लिए प्रेरित करती हैं। आत्म-साक्षात्कार का मार्ग किसी उपाधि, कर्मकांड या वंशावली से शुरू नहीं होता बल्कि यह भ्रम को दूर करने से शुरू होता है। एक क्रांतिकारी आध्यात्मिक विचारक इन सामाजिक और धार्मिक संरचनाओं की नाज़ुकता और हानि को उजागर करता है और उन्हें अहंकार से उत्पन्न भ्रम के रूप में प्रकट करता है न कि हमारे सच्चे अस्तित्व का दर्पण। सच्चा गौरव रक्तसंबंध से नहीं बल्कि गहरे आत्मचिंतन से जन्म लेता है।

गरभ वास महि कुलु नही जाती ॥
गर्भ में पल रहे भ्रूण की कोई जाति, वंश-कुल या सामाजिक स्थिति नहीं होती।

ब्रह्म बिंदु ते सभ उतपाती ॥१॥
समस्त सृष्टि एक ही सर्वव्यापी ऊर्जा से उत्पन्न हुई है। (१)

कहु रे पंडित बामन कब के होए ॥
बताओ हे विद्वान पंडित ब्राह्मण, तुम कब से श्रेष्ठ उच्च कुल-जाति के पद पर आसीन हो?

बामन कहि कहि जनमु मत खोए ॥१॥ रहाउ ॥
बार-बार स्वयं को श्रेष्ठ कहकर अपना जीवन व्यर्थ मत करो। (१)(विराम)

जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ ॥
यदि तुम सचमुच श्रेष्ठ हो, उच्च कुल में जन्मे हो

तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥२॥
तो फिर तुम किसी और मार्ग से इस संसार में क्यों नहीं आए? (२)

तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ॥
तुम उच्च कुल के होने से श्रेष्ठ कैसे माने जाते हो और हम निम्न कुल के होने से हीन कैसे माने जाते हैं ?

हम कत लोहू तुम कत दूध ॥३॥
क्या हम रक्त से बने हैं और तुम दूध से बने हो? (३)

कहु कबीर जो ब्रह्मु बीचारै ॥
कबीर कहते हैं कि जो लोग सृष्टि की एकता को अपने अस्तित्व का सच मानते हैं

सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारै ॥४॥७॥
हमारे समाज में केवल वही उच्च जाति के श्रेष्ठ कहलाने योग्य हैं। (४)(७)

**तत्त्व:** भगत कबीर सामाजिक और धार्मिक ऊँच-नीच के गहरे जड़ से जमी प्रथा को चुनौती देते हैं। वह जन्म पर आधारित श्रेष्ठता के विचार का विरोध करते हैं और हमें याद दिलाते हैं कि सभी जीवित प्राणी एक ही स्रोत से आते हैं। पारिवारिक पृष्ठभूमि या सामाजिक प्रतिष्ठा चाहे जो भी हो हम सभी एक ही भौतिक रूप साझा करते हैं और एक ही तरह से जन्म लेते हैं, जन्म नलिका के माध्यम से अपनी माँ के गर्भ से। यह साझा मूल पैतृक शुद्धता या वंश-श्रेष्ठता की अवधारणा को निरर्थक बना देता है। हमारा वास्तविक सार पहचान से परे है जो प्रश्न उठाता है यदि हम सभी एक ही जैविक प्रक्रिया से पैदा हुए हैं तो एक जन्म दूसरे से अधिक पवित्र क्यों है? सामाजिक या धार्मिक क्षेत्र में श्रेष्ठता को वास्तव में क्या परिभाषित करता है? जो लोग विविधता में एकता के सत्य को समझते हैं और उसके अनुसार जीते हैं वही इस मान्यता और प्रतिष्ठा के हकदार हैं। भगत कबीर चेतावनी देते हैं कि बौद्धिक अहंकार या धार्मिक अभिमान को अपनी पहचान पर हावी होने देना हमारी आत्म-चेतना को धुंधला कर, जीवन के अनमोल उपहार को बर्बाद कर देता है।

---

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
**Oneness In Diversity Research Foundation**
**वेबसाइट:** [OnenessInDiversity.com](OnenessInDiversity.com)
**ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com**